

हु.न.
१८

पुनीके लिजो वागो पी न सो क
न हु ने सो छो ड न भए ॥ न व ठा
पणि पन कर न हो ॥ का हे नो ॥ जो
र गो पिका न सा थ वि हा र कर न
पी या जी नें दे रे वें हो ॥ ना नें आप
हु न वि सा य के ल जि न हो इ हे
श्री पी या जू के प्र ए य को प ने
सं न ड र पा य मा न हे ठा कु र ॥ ना
नें ल जि न ओ र ड र के व स ने सा
क्षान् प नि पा णा दि क ना ही क
रि स क न ना नें ठा कु र सर्व ओ

दे व न हो ॥ श्री या जू कहां हो ॥ कहां प
धा रे हो ॥ म नि क हं अ व र या को पा
प्र भ ए हें ॥ दे वो क हा क र्म भ यो ॥
अ व मे क हां जा ऊं क हा क रं ॥ ए
सी भां नि चिं ना को पा र ठा कु र न
पा व न भ ए ॥ ठा कु र सो म रां म हा पी
ह री ॥ ब हु न रे व द क रि क ह न हो ॥ मो
नें व हु न ही अ प या ध प र यो ॥ अ व
मे क हा क रों पी ॥ श्री पी या जू हं हा
व न मे पा उ धा रे हो ॥ मे न बु ला ए
मे व हु न अ न आ र की यो ॥ ना नें

कोपक विपधारे ॥ अथ बहुगका
लकों मेरे विरह करि कहा कर
होइगी ॥ कहा जानियें के सो क
ह पावत होइगी ॥ कहाइ नकी के
सी भांनि स्थिति होइगी ॥ क्यों ह
करि प्रसन्न होइ ॥ एताइ सविधि
धचिंता ठाकुर करत है ॥ २ ॥ म
याजू के संहें ॥ अनिकोपक भिने
देदी भुवली आरक्त ॥ अधीर को
पक वि ॥ फिर कचूड से देवे में
आर आरक्त ने जेह कह वि ॥ ओ

रचंचल ने न करि चलत मिथ
लहोइ जात है ॥ एताइ सकोपक
अवस्था की ॥ कोऊ अनिर्वचनी
यमुख मलकी परम सो भाको
मेरो मन लज्जा नोही ॥ ओ न धन न
है ॥ ३ ॥ ठाकुर उद्देश विरह में तेरा
क्षान्त हृदय में तेवा हिर देखत भ
ए ॥ तहां मन मुख कहत है ॥ जो मु
हारा कृपित आरक्त दोऊ लोच
न ॥ ना के विचार में पर्यो है मेरो
मन ॥ जे से जुगल कमल के डोडा

की नाहीं॥ ना पर आरक्त पराग
स्नेह प्ररकरि आरक्त मनोहर
हे॥४॥ नुह्यारी भ्रुकुटी धनुषवि
बेगारव्यो जो कटाक्ष बाण नाकरि
मोकों उपजी जो पीडा॥ सो मो
पेंसही न जाय॥ ना कों ओखद
करि समाओ॥ वही ओषद करि
समंगो॥ ओर ने नाहीं॥५॥ हे सु
मुखी नुम मोकों आयु नो करि
जानो॥ ओर मोकों आयु ने वच
ना मृत करि सींचो॥ ओर आयु

ने कर कमल करि मोकों स्पर्श
करो मेरो ना पहरो॥ मेरो स्वरू
पनी मीन को॥ नुह्यारो करुणा
रूपी॥ जल की जोल हर परम
सो भायमान॥ सो दर्यल हर में
विहार करि वेकी इच्छा कर नहे
॥७॥ या प्रकार पाण नाथ के क
हन॥ अत्यंत पीन के भर के भा
र करि॥ सिथल ठाकुर रसाल
श्री कालिंही जूके पुल निके
नो नन कुंज में॥ महा निर्मल

विमालनामेंठाकुरजायबेदे
हांअकस्मात्॥ श्रीमीयाजीकीस
खीकोऊएकआइकेअपनीस
मिनीजूकों॥ ठाकुरकीकीयोपहु
रदुःखसोकहतभई॥ हेसुभजेनु
मतोभाग्यमानगुमानीहोइ॥ श्री
मीयाजूतुह्यारेविरहकरिबहुन
खेदकोंपावनहे॥ कदाचितकहो
गेजागर्वकरिमानवनीहोइक
रिएसोनहीदीनतेंहदीनहे॥ ओ
रअखंतसुकुमारहे॥ ओरविर

हकरिखीनगातहे॥ चंदकीकीर
णहदाहकोकरतहे॥ गानेंगोकी
हनिंदकरतहे॥ निविधवायुभल
यकोंकरतहे॥ हेप्राणनाथतुह्या
गेनामकथनकरतहे॥ आपुने
देहहकीसुधिनाही॥ देखकरिक
हतहे॥ जोतुह्यारेप्राणकीजीव
तहे॥ ओरतुह्यारीलीलाकीनीव
चेष्टाकरतहे॥ ओरकुंजनमेंप्रवे
सकरितुह्यारोहिनामलहतहे॥
अखंतविरहकरिमीयाजूकीअ

वस्था कहत है॥ नवचकि न होई
के ऊचे कूदेख नहे॥ और नाहीं
ष्टा नाहीं॥ नाकरि उभयजी औ
हाचि नातामें डविरही है॥ अब तो
बहुन काल भए बोलन काल भए
बोलन हं नाहीं॥ और नुह्यारी
लनदि साविचारी स्वासो स्वास
छोडनहे॥ सो थोडो सो कछोडनहे
॥ जो मनि चितो की को राह मसा
नाते मंद छोडनिहे॥ १०॥ हे सुंदर
व॥ नुह्यारे विरह ने मर्म की ठोर

वात कदी है॥ नाते मूर्खी कों प्राप्नम
ई है॥ सो क्योंहु जागति नाहीं॥ सो नु
ह्यारी कृपा करि जागेगी॥ हमारे उ
पचार करि कहा होइ॥ ११॥ प्रीयाजू
विरह दिसा मे तो॥ चंदन अरगजा
को तो भिस करि मानत है॥ और
चंदमा के किरण कों और कमल
कों तो अग्निसमान मानत है॥ औ
र कंठ विषें पुष्प की माला सो असा
खलागत है॥ और मुक्ता फल के हा
र को महाभार करि जानत है॥ १२॥

हे दीना नाथ ॥ हे दीना नाथ प्रीति
 जनु ह्यारे विरह करि अत्यंत विह्व
 ल होइ भूमि विषें लोटन हो ॥ घडी
 में गोविंदा पकरन हो ॥ घडी कमे
 रुदन करन हो ॥ ने जने आंसू चल
 न हो ॥ के सी है प्रियाजू कमल के
 लार तेह अति सुकुमार है अंगन
 को ॥ १३ ॥ हे प्राण नाथ ॥ तुझारे
 गंतु ह्यारी कं एसी दुःखी क्यों बू
 ये ॥ प्रीयाजू दीन तेह दीन हो ॥ सो
 मही को जो अपनो रहय में अवसि

निहो ॥ ताही को भाव प्राप्त को विहा
 र आ पुने आगे राखि के ॥ आपु
 ने आगे आपुनी दसमी अवस्था
 की प्रार्थना करन हो ॥ नमस्कार क
 रिको ॥ हे प्राण नाथ ॥ याने आगे तु
 म को कभी जनां ऊं ॥ १४ ॥ एना दस
 प्रियाजू पद पद विखें वार वार ए
 ही कहन हो ॥ नहां कहें जो तुझारे
 चरण कमल मोहं शरण हो ॥ १५
 फिर के सी है प्रियाजू ॥ घडी कमें
 रोमांच होइ आवन हो ॥ घडी कमें

३
हुन
२४

नो सत्कार करन हे ॥ निपट हूँ
हे ॥ बड़ी बार लों कें पायमान रहे
हे ॥ आगे सात्विक भाव हो न रहे
सुंदर वर फिर गल्या न को पा
न हे ॥ घड़ी कमें ने न मंदी रह न
फिर अंधकार में भटक न हे ॥ व
दी ने गिर पर न हे ॥ फिर दूर लों
जान हे ॥ फिर मूर्ख हो न हे ॥ हे
की सुधि ना ही रह न हे ॥ अति अ
नवं न हे ॥ १६ ॥ एनाइस विरह
दि साकों प्राप्ति भई जो प्रीया जू

सम काम चर विषं ॥ एक तुझारे
अधरा मृत कर ही गो जी वन संप
न होइ गी ॥ ना ते तुम हू पा रू पी
सी चन के पूर्व कर रि सी चो ॥ ना
ही तो मे तुम सो कह करूं ॥ मे तो अ
नि हीन ते हं दी न हं ॥ तुम दी ना ना
ण हो ॥ अब ठाकुर के से हे ॥ जो इंद
को पने पीडन जो ब्रज ना को आ
पुनी लीला करि ब्रज की रक्षा क
रि उझार की ने ॥ श्री गोवर्द्धना च
ल सिने मणी ॥ ओ ओ दत्ता को

सेह करि आइ चिन होइ उह भन
कीनो ॥ सो ठाकुर वेग हीं श्री प्री
जुकों बह न काल को विरह संगी
कोहरि करि ॥ श्री प्रिया जूके अने
क मनो रथ को सर्व ओर में परि
एकरो ॥ यह सखी ने आशिर्वा
दीयो ॥ ८ ॥ इति सती यह लस
संपूर्ण ॥ ३ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ अ
श्री ॥ कुन जी निहुं जमं दिर में
वेठे हैं ॥ नहां प्री या जूकी सहच
री प्रति कह न हें ॥ जो में इहां ही व

सनिहो ॥ न जाइ के प्री या जूकों
इहां लो आव ॥ मेरी बीन नी प्राण
पति के वचन कहि वेग हीं ले आ
वो ॥ बिलंब क रोम नि ॥ प्री या जू
के पास जाय कहियो ॥ या प्रकार
सो ठाकुर ने सार चिन करि के
कह्यो हे ॥ ओर सहचरी ह अनि
चतुर हे ॥ सो प्री या जूके निकट
आइ के कह न भई ॥ अर्ध सहचरी
ठाकुर की फिर पठाई ॥ श्री प्री या
जूके पास आई कह न भई ॥ हे रा

५
हु. न.
२६

धेइहांनंदसहनुंनुह्यादेविरह
रिसांपनिव्योहंकरिकछहसु
नाहीं॥बहुननोनुह्यासोनामहे
करिविषादकरनहे॥अस्यंतवि
षमविरहचरचंदमाहकीनिधि
करनहे॥नातेनुह्यासोअस्यंतवि
ननकरनहे॥नुह्यासीएकानकर
आपनुमहीहोइगएहे॥नातेनु
ह्यासीसकलआनिपीडाकोइस
रिकरेगो॥ठाकुरकेसेहें॥अपनी
ओरनुह्यासीपीडाइरिकरिदनी

पीडाकोप्राप्तभएहेंओरअस्यं
नसुकुमारहें॥नातेदुनीपीडा
सहनहुंसमर्थनाहीं॥आलीअ
धिकमेकहाकहं॥३॥जवपुकार
करिकहनहे॥जोहेप्रीये॥नुह्या
रोनामलेकरिबुजावनहे॥
नवहंकरकरिप्रछनहेजोनंद
सनुंआए॥नवकहियनुहेहांआ
ए॥याप्रकारआपुनीअवस्थासो
गधाहहोइगएहें॥याअवस्थाको
अनुसंधानकरियनुहें॥सखीस

हचरी कहम है ॥ हे प्रिये ॥ हमारे
पे के साम्य जे सें साई नील मे
स्याम होइ नामें विजुली के गंध
कोंहरे ॥ एनाइ समुह्यारे अंग
सम्यपी नांवर को ॥ ठाकुर जे
अरु छानी परमदा सर्वदा धर
हे ॥ वस्तुन सहनो ॥ श्री चामिना
जी की कानि को धरन है ॥ विरह
में जी वनार्थ प्रभु जी धरन है ॥
ओरनी चें तो नुह्यारे अ धर की
आरक्त कानि करि ॥ ओर ऊप

रने नुह्यारे नेत्र के अंजन की स्या
म कानि करि ॥ नुह्यारे ना साधु
को गज मुक्ता हे ॥ सो उनम गुंजा
फल साइ सह ॥ नानें ठाकुर सदा
ही यमें गुंजाहुं धरन है ॥ नानें वि
रहमें जी वन संपनि करन है ॥
श्री प्रीयाजू प्रति सहचरी कहन
हे ॥ जो कहा एसो विषम कंदर्प
बाण उत्सृष्ट ना पकुं सहन है ॥ च
लु आपुने प्राण को ॥ उत्सृष्ट ना
पकुं सहन है ॥ चलु आपुने प्राण

पेठकों मिलि और ठाकुर के कि
ह करि नो कुं उप ज्यो हे जो महां
पा नाकों समाया ॥ और ठाकुर
ह भीतर नुहारे वचना मृत
मणि नरनी कृजना दिक करि
संनोष करि ॥ और नुमह स्या नर
कोउ पाय ठाकुर के सब अंग वि
षे विलासकों करि हे सबी गंध
॥ यह दंदाव नभे ठाकुर वेग ही
मेरे मन का मना मनो रथ को
पूर्ण करो ॥ यह आशीर्वादी

सखी ने ॥ ५ ॥ यह यात्रि नो भई ओ
निवद अधिकार ह भयो ॥ ना ते हे
बिभु मुखी तं विलंब छोड़ि दे ओ
र नील नीवी को पद धांन करि ॥
ना में अभिसार करि ॥ प्रति पद
ल करि नृपुत्र को गूंज करि ॥ और
अंचल करि चूड़ी कंकणादि हीरा
रत्न भई कुंद कल करि टां किले ॥
और वेग चलि ॥ ६ ॥ श्री ठाकुर जी
उहां भानि भानि के कुंज में विचि न
और अस्त्र न को मल ॥ आमादिक

के कोमल पहनव आरन ॥ ओर
जलस्थल के कमल के पुष्प की
कोमल सुगंध सी तल पांखु
करि करि सुभग सों दय सों भाव
वान् शेष्या की आप रचना कर
तहें ॥ हे आली सुभग तल्य शयन
निर्मल करि तुह्या ने आगमन
कुंचकिनद छि करि के वानं वार
देखतहें ॥ ७ ॥ तुह्या रे आइ वेकी
बहुन आनि सों प्रनि रक्षा करत
हैं ॥ आपुने मन में मनो रथ भाव

ना करतहें ॥ जो श्री प्राण पीयाउ
साहें चलि करि आं वेंगे ॥ ना पा
हें मो को मनाइ वे को अभिनय
शुक्त दृष्ट करि मो कुंद रे वेंगी ॥ ना
पाहें आलिंगन दे करि बहुत
काल को आनि उता रेगी ॥ या प्र
कार की असंख्यात अंगन अंगन
करणी भीतर अनेक संवलिन
भाव शुक्त करतहें ॥ नव २ ठा कु
रतें मूर्ति वंन भाव शुक्त करतहें
नव नव ठा कु रतें मूर्ति वंन भाव

रूपही होइ जानहे ॥ निकेवलभ
रूपही होइ जानहे ॥ निकेवलभ
रूपही ॥ ८ ॥ एनाइसरसरूप
कुरनुमको अमिसार कबिबुल
वनहे ॥ ओरतहांसीतलमंदसु
गंधवा चुबह नहे ॥ उदीपनविभ
वा ॥ यानें ऊअधिक सुखहे ॥ निजे
कीमेंहनुमकहो कहहो तो ॥ ९ ॥
हे आत्मीनूं खेह कीसीतिनो नीके
नगहे ॥ ओर प्राण प्रियठकुरह
दयमें खेहके भरकरि आइ तेअ

एही ॥ सोहनुमनीके जानहो ॥
ओरनुमहं ठाकुरके विरह करि
संतमहुः रवीहो ॥ नुम जानहो
एते उपरांतहनुमनहां आइवे
कुं नोहीमानत गाकोहेनुमें नाहं
जानत ॥ हे कमलकर दीर्घनेत्र
मानहकीमेंडमर्यादा होनहे ॥ तं
तोमानिके अगाधिसमुद्रहंकी
मर्यादाउलंघनकीनी ॥ १० ॥ याम
कारहनाकेवचनसुनिकरि के
शीप्यारीजूके अखंत आरक्तको

हु. न.
३१

पकवि ॥ और स्नेह करि आस भे
करि को ॥ अंचल सोइ नी को देखा
भई ॥ श्री प्री या जू के से हो ॥ अण
विरह के भर करि दीन नें दीन हो
र स्नेह करि को पत आन के त भ
ना पाछे हरु वे से आ धे आ धे व
नइ नी सो कह न भई ॥ कमल की
सुदी गुलाव के जल सो भि जाइ
अपने उर पर सख न हो ॥ सो म
भार समल जा न हो ॥ ११ ॥ हे भि
वा द नी इ नी तं या प्रकार कू ठि को

कह न हो ॥ ठाकुर मो जुव निन के
जु अजु शन सो मिलि के खंद
चारी मर्या दाछां ठि के जुव निन
के विलास वस होइ ग ए हो ॥ उ हां
तें जुव नि आव न दे न ना ही निन
के आ धी न होइ रह हो ॥ बहु न रे
द करि प्या सी जू कह न हो ॥ भ लें नि
न जुव नि न वस होइ सु रे न र मो
॥ लोक हा प्रा ए प्री या के विरह करि
न प्रदा कर के सी न ल अ ध रा मु न
पी वे को मे रो मन वां छ ना क र मे

व
ह
ओर विधावा यह जरा व
तहो ॥ तो हां कु र मेरो मन छोड
तहो ॥ प्राण पिय वेद कहि कह
तहो ॥ मेरो मन स्वतंत्र हो ॥ मेरे वस
नांही ॥ तो मे कह कह कह ॥ १५ ॥ इहां ना
ही इन नीबा न कह न मेरो अर्द्धि ना
जी को चंद मां ऊंचे कुं आये ॥ न ब
होर निन मानी ॥ ताको पश्चाताप
हो न भयो ॥ इहां चंद माह भीतर क
लंक को मिसु कहि ॥ विभीचा रणी
स्त्री को रुदन करन लोचन को ज

ह. न.
३२
हो ॥ परि मन मेरो मेरे वस नही मे
मे कह कह कह ॥ १६ ॥ हे सखी ने कहे
जो ठा कु र के स्नेह को भर तुम पर
हे सो तो सखी हो ॥ तो प्राण जय
आयु ही क्यों नाही आवन ॥ मे मे
मान उपास बंदोष कछु नाही ॥ मे
निर्दोष वनी ह ॥ मेरी जो उ पे हा ह
देगे ॥ तो मे जानूंगी जो देव विधा
मेरो अदृष्ट विपरीति ही की ना
विरह में ठा कु र के स्मरण मां मे
से चंदन को सोंधो विशेष ॥ १७ ॥

हु.न.
३३

लञ्जो जे॥ जो कजल मुख चंद
पर सम्युक्त धरन॥ ता रस चंद
उदय हो न भयो हे॥ ओ रस वंध
बहन हे॥ कुलटा कुल समूह के
पकरि आरक्त कटाक्ष के समूह
छो डनें॥ उदय समय आरक्त के
माको देख कदि मी या जूही न हो
के बह न विला पकरन भई॥
प आना पकरि कहन हे॥ हा हा
इ क्यों हठा कर मो को छपा करे
गे॥ अधरा मृग हृष्याय जिवारे

गो॥ ठाकुर के अंग संग की आस्थ
विलंब न जीव न हो॥ यह दुनी ने मो
को दृष्टा डर काई॥ नहां नाथ तुझा
सी दीन होइ को न के शरण जाऊं॥
हे नाथ कृपा निधि॥ तुम करुणा
सिंधु हो॥ मेदी नहुं॥ मीन सुबेष्टिन
आपु नो बदन चंद दिखावो॥
भेंगे या मकार विरह नाथ के श
करि दुःखि न हें॥ ओर तुम मेरो स
रण ह नही करन॥ ओर तुझा सी
वियोगा मिज्या ला संयुक्त जो मेरो

मननाहुं तुम मे रहस्य में आई हैं
स्पर्श हैं नाहीं करन ॥ में नाहीं जान
न बह धाने इहां ही हो ॥ जो सब भी
ई होइ गो ॥ याने एनाइ सत्के शर्को
सहन हो ॥ नाहीं तो मेरो पाए एक क्ष
ण हू वि लं व स हि न स को ॥ परि यह
कछु भलोई होइ गो जो सहन हो ॥
राकु र गो निश्चय उन स्त्री न के अ
नु राग मन होइ रह हो ॥ ओर वे स
हं नि र्ज होइ के विहा र करन हो ॥
वे रा कु र हू अ नि च नु र हो ॥ में मो

स आवन दे न नाहीं ॥ जान रहें जो
कर ह मारे हाथ न आवें गो ॥ अथवा
अन्य न कहें प्रिया की हां वि लं व भ
जो होइ गो ॥ अथवा मा र्ग में आवन
अनि मधु र मूर्ति को का हने अटक
र होइ गो नों फिर न ए होइ गो ॥ प
रा कु र के से हो ॥ गो पि न की स्त्री न
के न के गो अंजन रूप सो भाग्य
सी वा हो ॥ ओर व्रज श्री मंति नी श्री
सा मि नी जी के ने न के मा रा की पुत
री हो ॥ ओर गो प कं न्या के कु च विषें

आपुलपटाइरहेहैं। ओर गो
न्या के आभूख नहुगहुग। ओ
आइरय विचारिरहेहैं। ओ
गोपकान के बाहलगावीचे
लंवन होइ स्यांमनमालअ
हैं। एमाइसठाकुरमुहारेवभा
नहोइके। कल्पनरजोवाकुरा
सुखदेहु। हेराधेवेगहीहसि
ह्यारेमनवांछा। इष्टकंकोने
हआसिवांइवहसखीकथय
अयकरिमसंगपूछ्योहेसोअ

निर्वादेगहैं॥१८॥ इति श्रीचतु
र्थलससंप्रदायि॥ ४॥
कोहकष्टकरिगोया प्रकार
सोविरहहुभवकरि। विरहकोअनु
भवकरनवती। नापाछेठाकुरयो
डीकलजाओरप्रणिपतिकरन
नीचेनेत्रकेअंचलकरिईक्षणा
खिसायकरि। नीचोदेखनसुंदर
ठाकुर। प्रातःकालविसेंसुंदरव
चनचानुरी मनोहरकरि। वीन
तीकेवचनकहिनेत्रमेंअस्यंन